VISION IAS

www.visionias.in

VISION IAS
M N 13 SEP 2022 No. 3
RECEIVED

SUBJECT:	ESSAY	Test Code:	2 1 2 2
Name of Candidate	MANISHA		
Medium Hindi/Eng.	HINDI	Registration Number	6 2 7 8 6 2
Center	Delhi	Date	13 09 2 0 2 2

INDEX TABLE

Q. No.	Page No.	Maximum Marks	Marks Obtained

Total Marks Obtained:

Remarks :

INSTRUCTIONS

1. Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Registration Number and Test Code).
उत्तर पुस्तिका में सूचनाएं भरना आवश्यक है (नाम, प्रश्न–पत्र कोड, विद्यार्थी क्रमांक आदि)।
2. All questions are compulsory.
सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
3. The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिए गए हैं।
4. Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate, which must be stated clearly on the cover of this Question-Cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other that the authorized one.
प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिए जिसका उल्लेख आपके प्रवेश पत्र में किया गया है और उस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न–सह–उत्तर (क्यूसीए) पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिए। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिए गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
5. Word limit in questions, if specified, should be adhered to.
प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिए।
6. Any page or portion of the page left blank in the Question-Cum-Answer Booklet must be clearly struck off.
उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिए।

EVALUATION INDICATORS

1. Contextual Competence
2. Content Competence
3. Language Competence
4. Introduction Competence
5. Structure - Presentation Competence
6. Conclusion Competence

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

1.

2.

3.

4.

5.

6.

All the Best

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

हम दुनिया को जिस नजर से देखते हैं, वह उसके प्रति हमारे व्यवहार को आकार प्रदान करता है।

हम जैसा दुनिया के बारे में विचार रखते है वास्तव में वैसी ही दुनिया हमें दिखाई देती है। इस कथन के संदर्भ में एक कहानी काफी प्रासंगिक है। जैसे—

"वर्षा के समय दो भाई खिड़की के बाहर देखते रहते है। तो उनकी माँ पूछती है कि बाहर क्या-क्या दिख रहा है? बड़ा बेटा जवाब देता है कि वर्षा के कारण सब लोगों को आने-जाने में काफी तकलीफ हो रही है, हर जगह किचड़-ही-कीचड़ है और पूरी सड़क पानी से भर गई है। वही छोटा बेटा जवाब देता है कि माँ वर्षा के कारण सारी प्रकृति, जीव-जंतु एवं पेड़-पौधे नहाए हुए प्रतीत हो रहे है और ऐसा लग रहा है वो प्रेम व ऊर्जा के कारण नाच रहे हो और हवाएँ जैसे उनमें ऊर्जा का संचार कर रही हों।"

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

इस कहानी में दृश्य एक ही है लेकिन उसका वर्णन बिल्कुल अलग तरीके से किया गया है। जहाँ बड़े बेटे ने वर्षा को एक नकारात्मक दृश्य के रूप में प्रस्तुत किया तथा दृश्य में सिर्फ वर्षा के कारण हुई कठिनाइयों को देखा। वहीं छोटे बेटे ने वर्षा के सकारात्मक पक्षों को देखा तथा उसका वर्णन किया।

इससे ये बात साबित होती है कि हमारा नजरिया हमारे अनुभवों को बहुत हद तक प्रभावित करता है। तथा जैसा नजरिया हमारा अपने समाज या स्वयं के बारें मे होता है। वैसा ही अनुभव हमें प्रकृति के द्वारा प्रदान किया जाता है। इसमें रामायण की ये उक्ति काफी प्रासंगिक है —

"जिसकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तेही तैसी"

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

जिसमें प्रभु राम को किसी ने अपने प्रियतम के रूप में पाया तो किसी ने अपने भगवान के रूप में। वही दशरथ ने अपने पुत्र के रूप में तो लक्ष्मण ने बड़े भाई के रूप में। यह दर्शाता है कि जिस सोच को अपने जीवन में हम महत्व देते हैं वो ही हमारे जीवन की वास्तविकता बन जाती है।

इतिहास में ऐसे बहुत से उदाहरण है जिसने दुनिया को नफरत, द्वेष व ईर्ष्या की भावना से देखा तथा इन्हीं भावनाओं को अपने अंदर आत्मसात किया। इसका सबसे प्रमुख उदाहरण हिटलर है जिन्होंने दुनिया को नफरत की नजर से देखा तथा यहूदियों के प्रति ईर्ष्या की भावना रखी। उन्हीं विचारों का प्रभाव हमें द्वितीय युद्ध व यहूदीयों के नरसंहार के रूप में देखने को मिला।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

ऐसा नहीं है तस्वीर सिर्फ नकारात्मक ही है विश्व में ऐसे भी बहुत लोग है जिन्हों-ने विश्व को प्रेम की दृष्टि से देखा तथा लोगों के प्रति प्रेम की भावना रखी। तथा उन्हीं विचारों के परिणामस्वरूप विश्व एक सुंदर तथा समानता वाला स्थान बना। जैसे- गांधी जी एवं मदर टेरेसा जैसे लोगों ने दुनिया को प्रेम की दृष्टि से देखा तथा इसी प्रेम के कारण उन्होंने विश्व को बेहतर आकार देने में अपना योगदान दिया।

मदर टेरेसा भारतीय मूल की नहीं है लेकिन मानवता की भावना सरहदें नहीं देखती एवं प्यार को किसी सीमा या नागरिकता से बांधा नहीं जा सकता। इसी बात की तस्वीर है मदर टेरेसा। जिन्होंने अपना पूरा जीवन भारत के लोगों के उत्थान में उत्सर्ग कर दिया तथा भारत रत्न के रूप में सम्मानित हुई।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

इन दोनों बिल्कुल भिन्न व्यक्तित्वों को देखने के बाद जिसमें एक हिंसक हिटलर है वही दूसरी ओर अहिंसा को बढ़ावा देने वाले गांधी जी। तो प्रश्न यह उठता है कि "वास्तव में कौन-सा नजरिया ज्यादा जरूरी है", तो इस सवाल के जवाब में कहा जा सकता है कि वह नजरिया जो सभी व्यक्तियों को समानता की दृष्टि से देखे तथा उनके प्रति प्रेम की भावना रखे।

विश्व में सभी के पास समान रूप से संसाधनों की उपलब्धता नहीं है तो एक ऐसे नजरिये की आवश्यकता है जो संसाधनों के अभाव में रहने वाले लोगों तक उनकी पहुँच सुनिश्चित करने का प्रयास करे। तथा बिना किसी द्वेष व नकारात्मक भावना या स्वयं के लाभ की भावना के बिना वंचित लोगों के उत्थान हेतु कार्य करें। सतत विकास व समावेशी विकास की संकल्पना भी इसी तथ्य पर आधारित है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

हाल में जलवायु परिवर्तन के प्राति समस्त विश्व में चिंता की भावना है। वही डीपीए व अल्पविकासित राष्ट्रों में डर की भावना अधिक है क्योंकि यूएनएफसीसी के द्वारा जारी रिपोर्ट में इन राष्ट्रों की जलवायु परिवर्तन के प्राति सुभेद्यता सर्वाधिक है। इसी के परिणामस्वरूप इन राष्ट्रों के द्वारा जलवायु परिवर्तन के प्राति समग्रता से लड़ने का प्रयास किया जा रहा है।

वही अमेरिका जैसे राष्ट्र द्वारा जो तकनीक व अनुसंधान के क्षेत्र में विश्वशक्ति है के द्वारा जलवायु परिवर्तन की अवधारणा को नकारना तथा कोप की बैठक से स्वयं को अलग कर लेना। यह स्थिति दर्शाती है कि जरूरी नहीं है कि आप विकासित राष्ट्र हैं या विकासशील। जरूरी है आपका समस्याओं के प्राति नजरिया क्या है? या आप विश्व की समस्याओं के प्राति सिर्फ आँख बंद करना चाहते हैं।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

अमेरिका के द्वारा जलवायु परिवर्तन की अवधारणा के नकार देने से जलवायु परिवर्तन की समस्या न तो खत्म हो जाएगी और न ही अपने प्रभाव को कम करेगी। इससे ये जरूर होगा कि अल्पविकसित राष्ट्रों को जो तकनीक या आर्थिक सहायता मिलनी थी वो कम हो जाएगी। जिसका प्रभाव जलवायु परिवर्तन की तीव्रता व नकारात्मक प्रभावों के रूप में विश्व के समक्ष प्रकट होगा।

इसपर स्वामी विवेकानंद जी का कथन काफी प्रासंगिक है कि "समस्याओं की ओर से मुँह फेर लेने से समस्या समाप्त नहीं होती है बल्कि अपना रूप विकराल करती रहती है तथा एक दिन भयावह रूप में हमारे समक्ष उपस्थित होती है।" यही बात जलवायु परिवर्तन पर भी लागू होती है। उसको नकारना समस्या का समाधान नहीं है बल्कि पूरे विश्व को मिलकर इससे लड़ने की शक्ति दर्शाना इसका समाधान है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

व्यक्तिगत स्तर पर देखें तो हमारे विचार हमारे व्यक्तित्व का निर्माण करते है जैसे विचार हम अपने बारे में सोचते है वैसा ही हमारा व्यक्तित्व बन जाता है। अगर विचार सकारात्मक है तो साहसी, दृढ़संकल्पवान व ऊर्जावान व्यक्तित्व का निर्माण होगा। वहीं अगर विचार नकारात्मक है तो निराशा, हताशा व अवसाद जीवन के महत्वपूर्ण अंग बन जाएगें। स्वामी जी ने भी कहा है–

"अपने विचारों के प्रति सदा सावधान रहो क्योंकि जिस दिशा में विचार जाते है, उसी दिशा में ऊर्जा का प्रवाह होता है, और वैसा ही अनुभव हमे प्राप्त होता है।"

इसका एक सफल उदाहरण यूपीएस-सी टॉपर इरा सिंघंल मैम है। जिन्होने अपनी शारीरिक असक्षमताओं को अपनी सफलता की राह में रुकावट नहीं बनने दिया तथा अपनी शारीरिक परिस्थितिओं व समाज की

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

विचारधाराओं से लड़कर वो मुकाम हासिल किया जो इससे पूर्व दिव्यांग लड़की के लिए सोचना भी शायद मुश्किल था। यह कहानी दर्शाती है कि आपकी बाह्य परिस्थिति आपकी मुख्य चुनौती नहीं है बल्कि आपका अपने प्रति विपरित परिस्थितिओं के बाद भी सकारात्मक विचार रखना मुख्य चुनौती है। अगर हम अपनी नकारात्मक भावनाओं से लड़ सकते है तो हम वो सब हासिल कर सकते है जिसका हम स्वप्न देखते है।

ऐसा ही उदाहरण भारतीय एथलीट हीमा दास द्वारा प्रस्तुत किया गया जब उन्होंने लगातार अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लगातार 5 गोल्ड मेडल जीतकर पूरे विश्व को चौंका दिया। लेकिन जब उनकी जिंदगी के बारे में जानने को मौका मिला तो पता चला कि जरुरी नहीं है कि विश्वस्तर का एथलीट बनने के लिए अच्छी डाइट हो या अच्छे जूते या अच्छा कोच हो। लेकिन जो सबसे जरुरी है वो है आपकी सोच। अगर आपको लगता है कि आप विपरित परिस्थिति या अभाव

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

की स्थिति के बाद भी अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं तो वास्तव में आप ऐसा कर सकते हैं। एक बॉलीवुड फिल्म का डायलॉग इसमें काफी सही प्रतीत होता है—

"जब आप किसी चीज को शिद्दत से चाहते हैं तो पूरी कायनात उससे मिलाने की साजिश में लग जाती है"।

इन सफल एवं दृढ़संकल्पित व्यक्तित्व के विवरण के बाद अब प्रश्न यह उठता है कि एक व्यक्ति के विचार कैसे होने चाहिए? इसका जवाब है कि हमें ऐसे विचारों को अपनाना चाहिए जो व्यक्तिगत स्तर पर हमें ऊँचा उठाते हो तथा हमारे अंदर ऊर्जा व प्रेम का संचार करते हैं। ऐसे विचार जो हमें लगातार अच्छा करने के लिए प्रेरित करते हैं। स्वामी विवेकानंद ने भी कहा है—

"जो विचार तुम्हें शारीरिक, मानसिक या आध्यात्मिक रूप से कमजोर बनाता है उसे विष के समान

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

समझकर त्याग दो। तथा उन विचारों को अपनाओं जो तुम्हारे अंदर ऊर्जा, प्रेम व शक्ति का संचार करें। ??

कई बार परिस्थिति ऐसी उत्पन्न हो जाती है कि हम न चाहते हुए भी नकारात्मक विचारों से घिर जाते है तथा कई बार उनसे निकालना काफी मुश्किल हो जाता है ऐसे में प्रेरणादायी व्यक्तित्व व भारतीय राष्ट्रवादी नेताओं के जीवन का अध्ययन काफी सहायक महसूस होता है तथा हमें समस्याओं के प्रति भिन्न नजरिये से सोचने के लिए प्रेरित करता है। और विपरित विचारों से निकलने में सहायता करता है।

इसमें एक कहानी का वर्णन बहुत महत्वपूर्ण है। जिसमे:- "दो बच्चे देखते है कि उसके पिता उनकी माँ को रोजाना पीटते है एवं दुर्व्यवहार करते है। दोनों का बचपन इसी तरह गुजरता है जब वो बड़े हो जाते है तो बड़ा बेटा अपनी पत्नी का पूरा सम्मान करता है तथा कभी उस पर हाथ नहीं उठाता

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

वही छोटा बेटा अपने पिता के समान अपनी पत्नी को पीटता है व दुर्व्यवहार करता है"

इसमें दृश्य दोनो भाई के समक्ष समान है लेकिन उससे प्राप्त सीख बिलकुल भिन्न है। अब जरूरी ये है कि महत्वपूर्ण सीख क्या है तो महत्वपूर्ण सीख वो है जो भावनात्मक रूप से हमारे अंदर नकारात्मक भावों का समावेश करें या हमें दूसरे इंसान के प्रति हिंसा करने के लिए प्रेरित करे वो पूर्णतः गलत है। वास्तव में प्रेम व समानता की भावना व्यक्ति को महान बनाती है।

जीवन में ऐसे कई क्षण आते है जब असफल या नकारात्मक हो जाते है ऐसे में आवश्यक है हम अपने विचारों को सकारात्मक बनाए तथा हमेशा स्वयं के प्रति एक सकारात्मक विचार रखें। कई बार ऐसा करना मुश्किल होता है लेकिन फिर भी पूरी कोशिश करनी चाहिए कि हम अपने व आस-पास के

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

लोगों के प्रति सकारात्मक विचार रखें। यही विचार हमारे जीवन और अनुभवों को निर्धारित करते हैं। तथा निरंतर सकारात्मक की प्रेरणा देने वाली यह पंक्ति काफी महत्वपूर्ण है—

संकारात्मक सोच संग, ऊर्जा और उत्साह लिए
जीतेंगे हर बाजी को, मन में ये विश्वास लिए
ऊहापोह-अटकलें-अड़चनें, अवसादों को हो अवसान
हो बाधाएँ कितनी पथ में, चेहरे पर हो बस मुस्कान,
अंतर्मन में भरी हो ऊर्जा, नई शक्ति का हो संचार,
डटकर चुनौतियों से लड़कर, जीतेंगे सारा संसार,
ले संकल्प सृजन का मन में, नई शक्ति से हो भरपूर
धुन के पक्के उस राही से, मंजिल है फिर कितनी दूर

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

एक स्वं जो निरंतर परिवर्तित होता है,
वह स्व अस्तित्व में बना रहता है।

जो स्वयं को निरंतर परिवर्तित करता है वह स्वयं के अस्तित्व को बनाए रखने में सक्षम होता है। ऐसी ही बात भगवान बुद्ध के द्वारा कही गई है कि—

"परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है"

प्रकृति के अवलोकन से यह बात पूर्णत: साबित होती है कि प्रवाह ही जीवन है तथा ठहराव मृत्यु है। जब एक नदी लगातार प्रवाहित होती है तो यह स्वच्छ व शुद्ध बनी रहती है लेकिन जैसे ही उसके पानी में ठहराव आता है तो नदी का पानी पीने योग्य नहीं माना जाता है। इसलिए नदी भी हमें इसी निरंतर प्रवाह की सीख प्रदान करती है।

ऐतिहासिक रूप से देखे तो भी यह बात सही साबित होती है। उदाहरण

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

के लिए हम सिंधु घाटी सभ्यता को ले सकते है। जो गाँव से लेकर एक सुनियोजित नगरीय व्यवस्था के रूप में विकसित हुई। तथा विश्व के सबसे आधिक सुनियोजित व विकसित शहरी सभ्यता में से एक बनी। लेकिन एक समय के बाद इसका पता हो गया।

कई रिपोर्टों में यह सामने आया है कि पतन के कुछ समय पूर्व अर्थव्यवस्था में ठहराव के तत्व दिखाई देने लग गए थे तथा सामाजिक व्यवस्था में भी पद संबंधी जड़ता दिखाई देने लग गई थी। जिसमें शक्ति का संकेद्रण मुख्यतः एक व्यक्ति या वर्ग के हाथों में चला गया। वहीं कृषि पर अत्याधिक निर्भरता व व्यापार को कम महत्व देना जैसे कई कारकों ने मिलकर एक समृद्धशाली अर्थव्यवस्था को पतन की राह पर पहुँचा दिया। इसलिए समय के साथ परिवर्तन न करने से बड़े-से बड़े साम्राज्य का अंत हो जाता है।

भारत में मुगल साम्राज्य की कहानी इससे भिन्न नहीं है। जिसने लगभग अधिकांश भारत पर अपना शासन स्थापित किया। साथ ही पूरे भारत को एक झंडे के नीचे एकत्रित किया। अपने चरम के दिनों में मुगलों से टकराने की कोई सोच भी नहीं सकता था। लेकिन समय के साथ भूराजस्व, राजा की नियुक्ति, मनसबदारी आदि में परिवर्तन न करने के कारण पतित हो गया।

जब हम गलतियों से सुधार करते हुए आगे नहीं बढ़ते है तो वे गलतियाँ हमारा सर्वनाश कर देती है। जैसे- शाहजहाँ की राजा के रूप में नियुक्ति संबंधी विवादों के बावजूद राजा की नियुक्ति संबंधी कोई नियम न बनाने के कारण औरंगजेब की नियुक्ति के दौरान भी यही संघर्ष व विवाद की स्थिति उत्पन्न हो गई तथा औरंगजेब के मरने के बाद इन्हीं विपरित व विध्वंसकारी शक्तियों

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

ने इतने बड़े साम्राज्य को पतन तक पहुंचा दिया।

इसका एक उदाहरण अमेरिका का हद से ज्यादा पूंजीवाद को समर्थन देना है। जिसने बाजार को पूरी तरह से बाजार के हाथों में छोड़ दिया गया। इस स्थिति में देश में फैल रही आर्थिक असमानता पर भी ध्यान नही दिया गया। आर्थिक असमानता इतनी अधिक बढ़ गई कि निम्न वर्ग में मांग बहुत न्यून हो गई। जिससे वस्तुओं का उत्पादन प्रभावित हुआ।

इसी प्रभाव के कारण उद्योगों का उत्पादन स्थिर या बंद हो गया तथा वाल स्ट्रीट धराशायी हो गया। जिसे 1929 की महामंदी के रूप में जाना जाता है। जिसके परिणामस्वरूप सरकार के द्वारा अपनी विचारधारा व नीतियों में परिवर्तन लाया गया तथा सरकार द्वारा सहायता कार्यक्रमों की शुरुआत की गई। सहायता कार्यक्रम का लोगों की खरीद व उद्योगों के उत्पादन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा तथा अर्थव्यवस्था पटरी

पर आ गई।

इसी स्थिति में अगर अमेरिका अपनी विचारधारा या नीति में परिवर्तन नहीं करता तो शायद अमेरिका ~~शक्त~~ आज एक विश्वशक्ति नहीं बन पाता। ऐसा ही उदाहरण हमें संयुक्त संघ रूस के रूप में भी देखने को मिलता है जिसने समय के साथ अपनी विचारधारा को परिवर्तित नहीं किया तथा जड़त्व के कारण इससे 12 देश अलग हो गए।

ये उदाहरण दर्शाते है कि प्रकृति स्वयं यह दर्शाती है कि जड़त्व अंत का कारण है। ऐसी बहुत जीव-जंतु है जो प्रकृति के अनुसार स्वयं को अनुकूलित नहीं कर पाए तथा समाप्त हो गए। एक समय था जब विस्तृत क्षेत्र पर डायनासोर का राज था। लेकिन जलवायु परिवर्तन के कारण उत्पन्न स्थिति में अनुकूलन स्थापित न करने के कारण वे विलुप्त हो गए।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

धार्मिक रूप से देखें तो बौद्ध धर्म एक समय भारत के विस्तृत क्षेत्र पर मौजूद था। उस समय अपने नवीन विचार तथा हिंदू धर्म के कर्मकाण्डों को नकारने के कारण इसका विस्तार बड़ी तीव्रता से हुआ। तथा सभी वर्गों के लोग इससे प्रभावित हुए। जिसमें स्वयं अशोक सम्राट शामिल था. भारत के साथ ही विदेशों में भी इसका प्रभाव फैला।

लेकिन समय के साथ यह भारत की भूमि से समाप्त हो गया। इसके कई कारण है लेकिन जो कारण सबसे महत्वपूर्ण है वह है उन्हीं कर्मकाण्डी तत्वों को समावेश जिनके विरुद्ध इसे स्थापित किया गया था. समय के साथ अपने आप को नवीनीकृत करने की क्षमता का अभाव तथा हिंदू धर्म के जड़ तत्वों के समावेश से यह समृद्धशाली धर्म भारत की भूमि पर बस कुछ क्षेत्रों तक ही सीमित रह गया।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

वर्तमान में जलवायु परिवर्तन भी लोगों को नई अवधारणा लगती है लेकिन वास्तव में यह प्रकृति का नियम है। अब तक 6 बार ऐसा हो चुका है। लेकिन वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन के प्रति चिंता का प्रमुख कारण मानवीय गतिविधियों के कारण इसकी तीव्रता में आई वृद्धि है। जो निश्चित समय से पूर्व ही पृथ्वी पर मानव के अस्तित्व को समाप्त कर सकती है।

यूएनएफसीसी के द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार 1970 के दशक के बाद हुई तापमान वृद्धि के लिए मानव ही उत्तरदायी है तथा जलवायु परिवर्तन की गति को मनुष्य से 1000 गुना तक तीव्र कर दिया है। इसलिए निरंतर परिवर्तन की सोच पृथ्वी पर मानव के अस्तित्व को बचा सकती है। अगर वर्तमान में हम अपनी विध्वंसकारी गतिविधियों

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

को रोक दे तथा ऐसे व्यवहार को बढ़ावा दे जो पर्यावरण के अनुकूल है तो शायद हम जलवायु परिवर्तन की विभीषिका से बच सकते है।

इसलिए जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए आवश्यक है कि ग्रीन हाउस उत्सर्जन करने वाली गतिविधियों को सीमित किया जाए, पर्यावरण संरक्षण पहलों में वृद्धि, राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सहयोग को बढ़ावा आदि। इनके माध्यम से हम स्वयं की अनुकूलन गतिविधियों को बढ़ाकर मानव के अस्तित्व को बचा सकते है।

विज्ञान के क्षेत्र में भी निरंतर विकास व अनुसंधान की गतिविधी ने मानव जीवन को सुरक्षित व दीर्घ बनाया है। अगर न्यूटन गुरुत्वाकर्षण की खोज के बाद स्वयं को सीमित कर लेता तथा निरंतर अनुसंधान नहीं करता तो शायद आज उनके द्वारा प्रतिपादित थ्योरी 'Gravitational Wave' की संकल्पना साकार नहीं हो पाती।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

भारत में आजादी के समय बंद अर्थव्यवस्था की नीति अपनाई गई थी। तथा आयात-निर्यात को सरकार के द्वारा विनियमित किया गया था। लेकिन 1990 के शुरू में उत्पन्न आर्थिक संकट के बाद इस नीति में परिवर्तन कर दिया गया। उस समय उत्पन्न परिस्थिती में विश्व बैंक के द्वारा ये बाध्यताएँ आरोपित की गई थी।

लेकिन 1991 की उदारीकरण, वैश्वीकरण की नीति से भारत में निवेश को बढ़ावा मिला तथा कई क्षेत्रों में भारत प्रमुख निर्यातकर्ता के रूप में शामिल हुआ। जैसे- आम, केला, मसाले आदि क्षेत्रों में भारत प्रमुख निर्यात-कर्ता है। तो वास्तविकता के साथ इस नीति पर गौर करें तो हम पाते है कि समय के साथ स्वयं में सुधार बहुत महत्वपूर्ण है तथा इसी के माध्यम से कोई देश या व्यक्ति अपना अस्तित्व बना कर

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

रख सकता है।

महिलाओं के संदर्भ में देखे तो भी यह स्थिति बिलकुल सही बैठती है। ऐतिहासिक काल से महिलाओं को दबाया गया है जिसका प्रभाव आज भी मानसिक स्तर पर महिलाओं द्वारा स्वयं को कमतर समझने के रूप में देखा जा सकता है। लेकिन समय के साथ स्वतंत्रता आंदोलन व तकनीक अनुसंधान द्वारा ये साबित किया गया कि महिलाएँ पुरुषों के समान ही सक्षम व बुद्धिमान है।

वर्तमान में भी सुधार की प्रक्रिया जारी है बस मुद्दे बदल गए है पहले सतीप्रथा, बहुविवाह आदि को समाप्त करने के लिए आंदोलन किए जाते थे वर्तमान में समान पारिश्रमिक, मातृत्व लाभ की प्रदायगी, समानता के अधिकार की प्रदायगी आदि के आधार पर जारी है। क्योंकि समय के साथ स्थिति जरूर बेहतर हुई है लेकिन ऐसे बहुत से क्षेत्र है जिनमें महिलाओं के समानता के

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

सिद्धांत को प्राप्त करना बाकी है।

विश्व बैंक द्वारा जारी रिपोर्ट में भी यह दर्शाया गया है कि महिलाओं की भागीदारी को बढ़ाकर जीडीपी में 30% तक की वृद्धि की जा सकती है। और साक्ष्य के रूप में भारत के राज्यों की प्रगति को देखा जा सकता है। जिन राज्यों में महिलाओं के प्रति हिंसा तथा असमानता की भावना अधिक है उन राज्यों में विकास व सामाजिक संकेतकों में प्रदर्शन भी अच्छा है। जैसे-केरल।

उसी तरह जिन राज्यों में महिलाओं के प्रति असमानता अधिक है उनका विकास भी कम देखने को मिलता है। जैसे-भारत के उत्तरी राज्य। जो उच्च आर्थिक संसाधनों के बावजूद सामाजिक संकेतकों में निम्न प्रदर्शन करते हैं। इस बात की पुष्टि राष्ट्रीय क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो द्वारा उत्तरी राज्यों में महिलाओं के प्रति अपराधों की अधिकता से की है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

निष्कर्ष के रूप में कहा जाए तो परिवर्तन संसार का नियम है तथा जो समाज या व्यक्ति समय को समय के साथ परिवर्तित कर लेता है। वह अपना अस्तित्व बनाए रख पाता है। परिवर्तन से आशय सकारात्मक सुधारों से है। जो व्यक्ति या समाज में सकारात्मक बदलाव लेकर आए। इसलिए समय के साथ अपनी गलतियों में सुधार तथा स्वयं में सकारात्मक बदलाव स्थायित्व व महानता दोनों के लिए आवश्यक है। इस संदर्भ में रॉबर्ट फ्रॉस्ट की पंक्ति बहुत महत्वपूर्ण है।

"Woods are lovely and dark
But I have promised to make
I have miles to go before I sleep
I have miles to go before I sleep"

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)